UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

राजनीति विज्ञान

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

राजनीति विज्ञान (11)

MODEL PAPER (RBSE) 6

कक्षा-XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट | पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड-"अ"

1. बहुविकल्पी प्रश्न -

(i) वर्तमान में 'गुटनिरपेक्ष आंदोलन' में कितने सदस्य हैं? [1]

(अ) 117 (ब) 116
(स) 120 (द) 115

(ii) बर्लिन की दीवार खड़ी की गई थी - [1]

(अ) 1961 में (ब) 1971 में
(स) 1951 में (द) 1981 में

(iii) 'साफ्टा' संबंधित है - [1]

(अ) सार्क (ब) आसियान
(स) ओपेक (द) यूनेस्को

(iv) किस वर्ष इन्दिरा गाँधी ने सोवियत संघ के साथ बीस वर्ष के लिए शान्ति, मित्रता तथा सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर किए थे? [1]

(अ) 1977 में (ब) 1972 में
(स) 1947 में (द) 1971 में

(v) भारत ने शुरूआती दौर में विकास की जो नीति अपनाई उसमें निम्नलिखित में से कौन-सा विचार शामिल नहीं था? [1]

(अ) नियोजन (ब) उदारीकरण
(स) सहकारी खेती (द) आत्मनिर्भरता

(vi) पंजाब से संबंधित है - [1]

(अ) ऑपरेशन पोलो (ब) ऑपरेशन ब्लू स्टार
(स) ऑपरेशन यलो (द) ऑपरेशन रेड

(vii) 'दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग' के अध्यक्ष कौन थे? [1]

(अ) मोरारजी देसाई (ब) काका कलेक्टर साहेब
(स) बी पी मंडल (द) अशोक मेहता

(viii) शीतयुद्ध के समय अमेरिकी और सोवियत खेमे का विभाजन सबसे पहले कहाँ हुआ था? [1]

(अ) एशिया (ब) यूरोप
(स) अफ्रीका (द) लातिनी अमेरिका

(ix) रूस में समाजवादी क्रांति किस वर्ष मे हुई? [1]

(अ) 1915 (ब) 1916
(स) 1917 (द) 1918

(x) 'प्रथम पंचवर्षीय योजना' का प्रारूप किस वर्ष में जारी हुआ था? [1]

(अ) 1948 (ब) 1949
(स) 1950 (द) 1951

(xi) 'स्वेज नहर के मुद्दे' पर 1956 में ब्रिटेन ने किस देश पर हमला किया था? [1]

(अ) ईरान (ब) मिश्र
(स) इराक (द) तुर्की

(xii) 'लोकदल' के संस्थापक कौन थे? [1]

(अ) चौधरी चरण सिंह (ब) जयप्रकाश नारायण
(स) मोरारजी देसाई (द) अशोक मेहता

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(i) लीग ऑफ नेशन्स के उत्तराधिकारी के रूप में _____ की स्थापना हुई। [1]

(ii) भारत ने सन् _____ में पहला परमाणु परीक्षण किया था। [1]

(iii) 1957 में _____राज्य में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की अगुआई में एक गठबंधन सरकार बनी। [1]

(iv) नॉर्वे के _____ संयुक्त राष्ट्रसंघ के पहले महासचिव बने थे। [1]

(v) _____ मुकदमें में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया था कि संविधान का एक बुनियादी ढांचा है। [1]

(vi) वर्ष _____ में बामसेफ का गठन हुआ था। [1]

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

(i) मध्यपूर्व संकट से क्या अभिप्राय है? [1]

(ii) भारत-रूस के बीच 2001 में क्या समझौत हुआ? [1]

(iii) भारत व रूस का वैश्विक शक्ति संतुलन पर किस प्रकार का दृष्टिकोण है? [1]

(iv) सोवियत संघ में भारत के किन कलाकारों की लोकप्रियता रही है? [1]

(v) अमरिकी वर्चस्व का क्या अर्थ है? [1]

(vi) किस युद्ध को 'कम्प्यूटर युद्ध' या 'विडियो गेम वॉर' की संज्ञा दी गई है? [1]

(vii) ग्रीन हाऊस गैसे कौनसी है? [1]

(viii) पर्यावरण संकट पर संयुक्त राष्ट्र संघ की किस एजेन्सी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है? [1]

(ix) वैश्वीकरण की आलोचना दक्षिण पंथियो के द्वारा किस आधार पर की जाती है? [1]

(x) वैश्वीकरण शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए। [1]

(xi) सूचना के अधिकार के आंदोलन का जन्म किस राज्य में हुआ? [1]

(xii) 73वें व 74वें संविधान संशोधन महिलाओं के लिए कितने प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है। [1]

खण्ड-"ब"

लघूत्तरात्मक प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 50 शब्द)

4. किन तीन क्षेत्रों में अमेरिका व भारत के बीच आर्थिक संबंध एक-दुसरे पर निर्भरता के रूप में दिखाई देते हैं? [2]

5. आपकी राय में पाकिस्तान में लोकतंत्रीकरण के लिए कठिनाईयों को बतलाइए। (RBSE - 2013) [2]

6. भारत और चीन के बीच विवादित मुद्दों का वर्णन कीजिए। (RBSE - 2013, 16) [2]

7. विश्व व्यापार संगठन का जन्म कब हुआ तथा यह किसका उत्तराधिकारी है? [2]

8. वर्तमान समय में विश्व किन चुनौतियों का सामना कर रहा है? [2]

9. राजनीति में 'जल युद्ध' शब्द से आपका क्या अभिप्राय है? [2]

10. वर्ल्ड सोशल फोरम के बारे में संक्षेप में जानकारी दीजिए। [2]

11. 1957 के चुनाव में किस राज्य में प्रथम बार गैर कांग्रेसी सरकार बनी तथा इसे किस आधार पर भंग किया गया? [2]

12. 1971 का चुनाव इंदिरा गांधी ने किन मुद्दों के आधार पर लड़ा। [2]

13. किन चुनावों को 'राजनीतिक भूकम्प' की संज्ञा दी जाती है और क्यों? [2]

14. नेशनल फिशवर्कर्स फोरम – NFF का गठन क्यों किया? [2]

15. ऑपरेशन ब्लू स्टार क्या है? [2]

16. भारत के कुछ भागों में व्याप्त अलगाववादी भावना से हम क्या सबक सीख सकते हैं? [2]

खण्ड-"स"

दीर्घउत्तरीय प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 100 शब्द)

17. आजादी के समय विकास के सवाल पर प्रमुख मतभेद क्या थे? क्या इन मतभेदों को सुलझा लिया गया? [3]

18. 'विदेश नीति का निर्धारण घरेलू ज़रूरत और अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के दोहरे दबाव में होता है।' 1960 के दशक में भारत द्वारा अपनाई गई विदेश नीति से एक उदहारण देते हुए अपने उत्तर की पुष्टि करें। [3]

19. सन् 1975 में आपातकालीन घोषणा से क्या उलझाव सामने आए? उनका सुधार कैसे किया गया? [3]

20. भारत में गठबंधन के पक्ष तथा विपक्ष में किन्हीं दो-दो तर्कों का वर्णन कीजिए। [3]

खण्ड-"द"

निबन्धात्मक प्रश्न - (उत्तर सीमा लगभग 250 शब्द)

21. शीतयुद्ध क्या है? शीतयुद्ध के दौरान सैन्य संगठन स्थापित करने के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन करते हुए शीतयुद्धकालीन सैन्य संगठनों का वर्णन कीजिए। [4]

अथवा

नवीन अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का निर्माण किन परिस्थितियों में हुआ? क्या गुटनिरपेक्षता की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका थी? समझाइये।

22. आसियान [ASEAN] की गठन प्रक्रिया को समझाते हुए इसके तीन स्तंभों तथा विजन-2020 पर प्रकाश डालिए। [4]

अथवा

यूरोपीय संघ एक अधिराष्ट्रीय संगठन के रूप में कैसे उभरा? इसकी सीमाएँ क्या हैं?

23. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत के पुनर्निर्माण के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ कौन-कौन सी थी? इन चुनातियों का सामना किस प्रकार किया गया? (राजस्थान बोर्ड 2015) [4]

अथवा

क्या भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन लोकतांत्रिक था? मुल्यांकन करें।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

उत्तरमाला मॉडल पेपर -06

खण्ड-"अ"

1. बहुविकल्पीय प्रश्न -

(i) [स]
वर्तमान में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के 120 सदस्य हैं जबकि प्रथम गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन-1961 के समय 25 सदस्य थे।

(ii) [अ]
1961 में बर्लिन की दीवार खड़ी की गई थी। यह शीतयुद्ध के दौरान वैचारिक द्वंद्व का परिणाम थी।

(iii) [अ]
साफ्टा - साउथ एशिया फ्री ट्रेड एरिया एग्रीमेंट का संबंध सार्क (दक्षेस) से हैं।

(iv) [द]
चीन, पाकिस्तान व अमेरिका के निकट संबंधों के विरूद्ध भारत ने 1971 में सोवियत संघ के साथ 20 वर्षीय संधि संपन्न की।

(v) [ब]
भारत ने आर्थिक विकास के लिए नियोजन, सहकारी खेती तथा आत्मनिर्भरता को अपनाया। उदारीकरण को भारत ने 1991 में अपनाया।

(vi) [ब]
पंजाब को खालिस्तान के नाम से स्वतंत्र देश बनाये जाने के लिए हिसंक आंदोलन भड़का जिसके विरूद्ध इंदिरा गांधी सरकार ने ऑपरेशन ब्लू स्टार चलाया।

(vii) [स]
दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग 1978 में बिंदेश्वरी प्रसाद मण्डल के नेतृत्व में गठित किया गया। इसे बी पी मण्डल आयोग के रूप मे जाना जाता है।

(viii) [ब]
शीतयुद्ध के दौरान यूरोप में अमेरिका तथा सोवियत संघ के नेतृत्व में पूँजीवादी व साम्यवादी खेमों का निर्माण हुआ।

(ix) [स]
1917 में व्लादिमीर लेनिन के नेतृत्व में बोलसेविक क्रांति हुई, जिसके माध्यम से निंरकुश जारशाही का अंत हुआ तथा साम्यवादी शासन की स्थापना हुई।

(x) [द]
योजना आयोग का गठन 1950 में किया गया तथा इस आयोग के द्वारा 1951-56 के लिए प्रथम पंचवर्षीय योजना का प्रारूप 1951 में जारी किया गया।

(xi) [ब]
1956 में मिश्र के तत्कालीन शासक नासिर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया जिसके विरोध में ब्रिटेन ने मिश्र पर हमला किया।

(xii) [अ]
चौधरी चरण सिंह कांग्रेसी नेता थे जिन्होंने कांग्रेस की नीतियों के विरोध में कांग्रेस छोड़कर किसानो का नेतृत्व करते हुए लोकदल पार्टी का गठन किया।

2. रिक्त स्थान की पूर्ति -

(i) संयुक्त राष्ट्र संघ
(ii) 1974
(iii) केरल
(iv) ट्राइग्व ली
(v) केशवानंद भारती वाद
(vi) 1978

3. अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

(i) मध्यपूर्व संकट सोवियत संघ से 1991 में पृथक हुए एशियाई देशों के संकट को कहा जाता है जहाँ तानाशाही शासन व गृहयुद्ध का जन्म हुआ।

(ii) 2001 में भारत और रूस के बीच 80 द्विपक्षीय दस्तावेजो पर हस्ताक्षर हुए।

(iii) भारत व रूस बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के पक्ष में हैं।

(iv) सोवियत संघ के देशों में राजकपूर तथा अभिताभ बच्चन की फिल्में बहुत लोकप्रिय हैं।

(v) आर्थिक सांस्कृतिक व सैन्य क्षेत्र में अमेरिका की प्रतिस्पर्धा में कोई भी राष्ट्र उसकी बराबरी नहीं कर सकता इसे अमेरिकी वर्चस्व कहा जाता है।

(vi) प्रथम खाड़ी युद्ध को 'कम्प्यूटर युद्ध' या 'विडियोग गेम वॉर' कहा जाता है।

(vii) कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, मीथेन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन।

(viii) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के द्वारा

(ix) दक्षिण पंथियों द्वारा वैश्वीकरण का विरोध संस्कृति के विलुप्त होने के खतरे के आधार पर किया जा रहा है।

(x) पूरे विश्व का सांस्कृतिक व आर्थिक आधार पर एक विश्व ग्राम के रूप में दिखाई देना वैश्वीकरण कहलाता है।

(xi) भीम तहसील राजस्थान

(xii) 33 प्रतिशत

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

खण्ड-"ब"

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

4. सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में भारत के कुल निर्यात का 65 प्रतिशत अमरीका को जाता है। बोईंग के 35 प्रतिशत तकनीकी कर्मचारी भारतीय मूल के हैं। 3 लाख भारतीय 'सिलिकन वैली' में काम करते हैं।

5. पाकिस्तान में सेना, धर्मगुरु और भूस्वामी अभिजनों का दबदबा रहा है, जिसके कारण कई बार निर्वाचित सरकारों को गिराकर सैनिक शासन कायम हुआ है। पाकिस्तान के भारत के साथ कभी अच्छे और स्वस्थ संबंध नहीं रहे हैं, जिसके कारण सेना ने सदैव अपना अधिक प्रभाव रखा है। यहाँ के दल कहते हैं कि यहाँ राजनीतिक दल और लोकतंत्र सफल नहीं हो सकते।

6. (i) तिब्बत समस्या (ii) भारत-चीन सीमा विवाद (iii) आंतकवाद पर चीन का भारत का विरोधी रूख (iv) संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता पर चीन का विरोधी रूख। (v) चीन की दक्षिण एशिया में हस्तक्षेप की नीति।

7. विश्व व्यापार संगठन का जन्म 1 जनवरी 1995 को हुआ। यह GATT (जनरल एग्रीमेण्ट ऑन टेरिफ्स एण्ड ट्रेड) का उत्तराधिकारी है। GATT समझौता 1947 में सपंन्न हुआ था।

8. वर्तमान समय में विश्व जिन चुनौतियां का सामना कर रहा है उनमें से प्रमुख चुनौती प्राकृतिक आपदा तथा महामारी है। इबोला वायरस, हैंटावायरस, हेपेटाइटिस सी, मलेरिया, डेंगी, मैड काऊ तथा कोविड-19 जैसी महामारियों ने पूरे विश्व को प्रभावित किया है। साथ ही पूरा विश्व वर्तमान समय में आतंकवाद के खतरे से भी जूझ रहा है अनेक देशों में आतंकवाद इतनी मजबूती से स्थापित हो चुका है कि पूरे विश्व के लिए एक बड़ा खतरा बन चुका है।

9. समुद्र से दूर बसे हुए देश जल की कमी का शिकार है। इन देशों में बरसात भी कम होती है तथा जल को सिंचित करने के संसाधनों की भी कमी है जिसके परिणाम स्वरूप यहां शुद्ध पेयजल तथा सिंचित जल की भारी मात्रा में कमी है जिसके परिणाम स्वरूप कुछ देशों में युद्ध की संभावना मौजूद है।

10. नव उदारवादी वैश्वीकरण के विरोध का एक विश्वव्यापी मंच वर्ल्ड सोशल फोरम (WSF) है। इस मंच के तहत् मानवाधिकार कार्यकर्ता, पर्यावरणवादी, मजदूर, युवा एवं महिला कार्यकर्ता एकजुट होकर नव उदारवादी वैश्वीकरण का विरोध करते हैं।

11. 1957 में केरल में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में भारत की प्रथम गैर कांग्रेसी सरकार का गठन किया गया। अनुच्छेद 356 (संवैधानिक तंत्र विफल होने) के आधार पर इस सरकार को भंग किया गया।

12. गरीबी हटाओं, प्रिवी पर्स की समाप्ति, गरीबी उन्मूलन, बेरोजगारी उन्मूलन, दलित अल्पसंख्यकों का विकास, महिला रोजगार, बैकों का राष्ट्रीयकरण इत्यादि मुद्दों के आधार पर इंदिरा गांधी 1971 में चुनाव लड़ा।

13. चौथे आम चुनाव – 1967 को राजनीतिक भूकम्प की संज्ञा दी जाती है क्योंकि इस चुनाव में कांग्रेस ने केंद्र में अपनी स्थिति को कमजोर किया तथा अनेक राज्यों में कांग्रेस अपनी सरकार नहीं बना सकी। कांग्रेस के दिग्गज नेता के कामराज, एस.के पाटिल, अतुल्य घोष, के.बी सहाय चुनाव हार गये।

14. 1980 के दशक के मध्यवर्ती वर्षों में आर्थिक उदारीकरण की नीति से मत्स्य पालन करने वाले लोगों की आजीविका को खतरा उत्पन्न हुआ। परिणामस्वरूप स्थानीय संगठनों ने राष्ट्रीय स्तर पर संगठन बनाया जिसे 'नेशनल फिशवर्कर्स फोरम' कहते हैं। नेशनल फिशवर्कर्स फोरम ने केन्द्रीय सरकार के साथ 1997 में पहली लड़ाई लड़ी तथा 2002 में राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया।

15. पंजाब के अकाली दल के कट्टरपंथी समुदाय ने आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव पारित होने के पश्चात् पंजाब को खालिस्तान के नाम से एक स्वतंत्र देश बनाये जाने की मांग रखी तथा पंजाब में हिंसात्मक गतिविधियों का दौर प्रारंभ हो गया। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' चलाकर पंजाब में खालिस्तान समर्थकों पर नियंत्रण स्थापित किया।

16. भारत के कुछ भागों में व्याप्त अलगाववादी भावना से हम निम्नलिखित सबक सीख सकते हैं।

- भारतीय संघ के समस्त क्षेत्रों का समान आर्थिक विकास होना चाहिए।
- भाषाई एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा की जानी चाहिए।
- भारतीय राजनीति एवं सरकार में सभी वर्गों का समान प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

खण्ड-"स"

दीर्घउत्तरीय प्रश्न -

17. स्वतंत्रता के समय भारत के समक्ष विकास के दो मॉडल थे - उदारवादी मॉडल तथा साम्यवादी मॉडल। भारत ने दोनों के मिश्रित मॉडल को अपनाया। इस मॉडल के अंतर्गत कुछ आर्थिक क्षेत्रों को सरकार के अधीन रखा गया तथा शेष क्षेत्रों को निजी क्षेत्रों के रूप में रखा गया। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत कृषि तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत औद्योगिक विकास को प्राथमिकता दी गई। लेकिन इस समय कृषि बनाम औद्योगिक विकास जैसे मुद्दे ने जन्म लिया। चौधरी चरण सिंह जैसे किसान नेताओ ने ग्रामीण विकास तथा कृषि विकास को ही द्वितीय पंचवर्षीय योजना में जारी रखने का मुद्दा उठाया। औद्योगिकीकरण के समर्थकों का मानना था कि औद्योगिक विकास के बिना बेरोजगारी दूर करना संभव नहीं

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

है अत: सरकार का औद्योगिक विकास की दिशा में उठाया गया कदम सही है।

18. यह कथन बहुत हद तक सही है, जो कि 1962 के भारत-चीन संघर्ष के दौरान साबित होता है, जिसने भारत की छवि घरेलू व अंतराष्ट्रीय दोनों स्तरों पर खराब हुई। भारत को मसलों को हल करने के लिए अमरीकियों व अंग्रेजों की सैन्य सहायता मांगनी पड़ी। सोवियत संघ इस संघर्ष के समय तटस्थ रहा -

- इन समस्त घटनाओं से राष्ट्र के स्वाभिमान को चोट पहुँची, परन्तु इसने दूसरी तरफ राष्ट्रवाद की भावना का भी विस्तार किया।
- चीन के इरादों को समय रहते न भांप सकने और सैन्य तैयारी न कर पाने को लेकर नेहरू की बड़ी आलोचना हुई।
- देश का राजनीतिक मानस बदलने लगा था, तब नेहरू की सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया और लोकसभा में इस पर बहस हुई।
- भारत-चीन संघर्ष की वजह से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी 1964 में टूट गई व चीन के पक्षधर खेमे ने मार्क्सवादी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी बनाई।
- चीन के साथ हुए युद्ध ने भारत के नेताओं को पूर्वोत्तर की डाँवाडोल स्थिति के प्रति सचेत किया।
- यह इलाका अत्यंत पिछड़ा हुआ था और अलग-थलग पड़ गया था। राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिहाज से भी यह इलाका चुनौतिपूर्ण था।

19. 25 जून, 1975 की रात्रि में प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से आपातकाल लागू करने की सिफारिश की। राष्ट्रपति ने तुरन्त यह उद्घोषणा कर दी। अर्द्ध रात्रि के पश्चात् सभी बड़े समाचार पत्रों के कार्यालयों की बिजली काट दी गयी। प्रातः बड़े पैमाने पर विपक्षी दलों के नेताओं व कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी हुई। 26 जून की सुबह 6 बजे एक विशेष बैठक में मंत्रिमण्डल को इन बातों की सूचना दी गयी, परन्तु तब तक बहुत कुछ हो चुका था। आपातकाल की घोषणा के साथ ही शक्तियों के विभाजन का संघीय ढाँचा व्यावहारिक तौर पर निष्प्रभावी हो जाता है।

घोषणा से उलझाव -

देश के शीर्ष 676 नेताओं को गिरफ्तार किया गया, प्रेस पर कई तरह की पाबंदियाँ लगाई गईं, सभी समाचार-पत्रों के कार्यालयों की बिजली आपूर्ति बंद कर दी गई, इस काल के दौरान पुलिस की यातनाएँ व पुलिस हिरासत में लोगों की मौतों की घटनाएँ बढ़ गईं।

उलझावों के सुधारों का प्रयास -

आपातकाल की समाप्ति की घोषणा करके सभी राजनीतिक बंदियों को छोड़ दिया गया, परिवार नियोजन कार्यक्रम को त्याग दिया गया, शीघ्र ही नए आम चुनावों की घोषणा की गई। जिनमें कांग्रेस बुरी तरह पराजित हुई, आपातकालीन ज्यादतियों की जाँच के लिए जनता पार्टी की सरकार द्वारा 'शाह आयोग' का गठन किया गया।

20. गत कुछ वर्षों में भारतवर्ष में गठबंधन सरकार का प्रचलन बढ़ गया है। पक्ष में तर्क -

(i) विकल्प प्रदान करना: गठबंधन सरकार उस परिस्थिति में एक अच्छा विकल्प प्रदान करती है जब किसी भी पार्टी को बहुमत न मिले और देश को फिर चुनाव में झोंकने से बचाया जा सके।

(ii) व्यापक सहभागिता: गठबंधन सरकार अनेक दलों और विभिन्न प्रकार के राजनैतिक विचारधाराओं को समन्वय प्रदान करती है जिससे सभी को अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

(iii) क्षेत्रीय दलों को प्रतिनिधित्व: गठबंधन सरकार में अनेक क्षेत्रीय दल सम्मिलित होकर अपने-अपने क्षेत्रों के विकास के लिए कार्य करते हैं।

विपक्ष -

1. **राजनीतिक अस्थिरता -** विचारों का समन्वय न होने से गठगबंधन सरकार के टूटने का हमेशा खतरा बना रहता है। किसी भी वक्त राजनैतिक अस्थिरता आ सकती है।
2. **अवसरवाद को बढ़ावा -** गठबंधन की सरकार को बचाने के लिए विभिन्न दल अवसरवाद की राजनीति करते हैं और अपनी मांगों को मनवाने का गैर-जिम्मेदाराना प्रयास करते हैं।
3. **भ्रष्टाचार की स्थिति -** अवसरवाद की राजनीति भ्रष्टाचार को जन्म देती है। राजनैतिक दल सरकार को बनाने और बचाने के लिए अपनी कीमतों की माँग करते हैं।

खण्ड-"द"

निबन्धात्मक प्रश्न -

21. **शीतयुद्ध का अर्थ -** द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् संयुक्त राज्य अमेरिका तथा सोवियत संघ दो महाशक्तियों के रूप में उभरे। दोनों देशों ने पूँजीवादी व साम्यवादी खेमों को जन्म दिया। सोवियत संघ द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात पूर्वी यूरोप व मध्य एशिया में साम्यवाद के प्रचार-प्रसार में जुट गया। अत: पूँजीवादी देशों ने साम्यवाद के बढ़ते खतरे से निपटने के लिए एकजुट होने का निर्णय लिया। दोनों खेमों के बीच वैचारिक द्वंद्व प्रारम्भ हुआ। यह वैचारिक द्वंद्व 1945-91 तक चला। इस द्वंद्व को शीतयुद्ध के नाम से पुकारा जाता हैं। शीतयुद्ध के दौरान दोनों खेमों ने एक-दुसरे से अपनी सुरक्षा के लिए सैन्य संगठनों का गठन किया। गठबंधन में शामिल किसी एक देश पर होने वाले आक्रमण का सभी सहयोगी मिलकर सामना करेंगें।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

शीतयुद्धकाल में सैन्य गुटों का जन्म -

(i) नाटो NATO (North Atlantic Treaty Organisation;- 1949 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा पूंजीवादी राष्ट्रों के गठबंधन से उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन नाटो का गठन किया गया जिसमें 12 सदस्य शामिल थे वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 30 है इस संधि संगठन में यह तय किया गया कि किसी भी देश पर हमला होने की स्थिति में शत्रु के खिलाफ नाटो सदस्य मिलकर उसका सामना करेंगे। नाटो सदस्य - स.रा.अमेरिका, ब्रिटेन, स्पेन, इटली, प.जर्मनी, नॉर्वे, पुर्तगाल, फ्रांस, बेल्जिय, निदरलैण्ड, तुर्की, ग्रीस। यह संगठन वर्तमान में अस्तित्व में जबकि निम्न संगठन अस्तित्व हीन हो चुके है।

(ii) वारसा संधि (1955) साम्यवादी देशों के द्वारा नाटो के विरुद्ध पोलैंड के वारसा शहर में वारसा संधि की गई। इस संधि का उद्देश्य नाटो के विरुद्ध साम्यवादी देशों को सैन्य गठबंधन में शामिल करना था तथा इस संधि में शामिल किसी भी देश पर हमला होने पर सभी देश मिलकर इसका सामना करेंगे इस संधि का मुख्य आधार था। सदस्य - (सोवितय संघ, पौलेण्ड, पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रोमानिया, बुल्गारिया)।

(iii) सीटो SEATO - South East Asian Treaty Organisation (1954) दक्षिण पूर्वी एशियाई संधि संगठन की स्थापना पूंजीवादी देशों के द्वारा एशिया में सैन्य संगठन के रूप में की गई। सदस्य - (अमेरिका, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, न्यूजीलैण्ड, फिलिपीन्स, थाइलैण्ड, पाकिस्तान)।

(iv) सेंटो CENTO (Central Treaty Organisation) 1955 केंद्रीय संधि संगठन की स्थापना एशिया में की गई। पूर्व में इसका नाम बगदाद संधि था बाद में इराक द्वारा समझौते से अलग होने के पश्चात् परिवर्तन कर केंद्रीय संधि संगठन रखा गया। सदस्य - (तुर्की, इराक, इरान, पाकिस्तान, ग्रेट, ब्रिटेन)

अथवा

गुटनिरपेक्ष देश शीतयुद्ध के दौरान महज मध्यस्थता करने वाले देश भर नहीं थे। गुटनिरपेक्ष आंदोलन में शामिल अधिकांश देशों को 'अल्प विकसित देश' का दर्जा मिला था। इन देशों के सामने मुख्य चुनौती आर्थिक रूप से और ज्यादा विकास करने तथा अपनी जनता को ग़रीबी से उबारने की थी । नव स्वतंत्र देशों की आज़ादी के लिहाज़ से भी आर्थिक विकास महत्त्वपूर्ण था। बग़ैर टिकाऊ विकास के कोई देश सही मायनों में आज़ाद नहीं रह सकता। उसे धनी देशों पर निर्भर रहना पड़ता। इसमें वह औपनिवेशिक देश भी हो सकता था जिससे राजनीतिक आज़ादी हासिल की गई।

इसी समझ से नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की धारणा का जन्म हुआ। 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ के व्यापार और विकास से संबंधित सम्मेलन (यूनाइटेड नेशंस कॉन्फ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलपमेंट-अंकटाड) में 'टुवार्ड्स अ न्यू ट्रेड पॉलिसी फॉर डेवलपमेंट' शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इस रिपोर्ट में वैश्विक व्यापार प्रणाली में सुधार का प्रस्ताव किया गया था। इस रिपोर्ट में कहा गया था कि सुधारों से -

(क) अल्प विकसित देशों को अपने उन प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त होगा जिनका दोहन पश्चिम के विकसित देश करते हैं:

(ख) अल्प विकसित देशों की पहूँच पश्चिमी देशों के बाज़ार तक होगी; वे अपना सामान बेच सकेंगे और इस तरह ग़रीब देशों के लिए यह व्यापार फायदेमंद होगा;

(ग) पश्चिमी देशों से मंगायी जा रही प्रौद्योगिकी की लागत कम होगी और

(घ) अल्प विकसित देशों की अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों में भूमिका बढ़ेगी।

गुटनिरपेक्षता की प्रकृति धीरे-धीरे बदली और इसमें आर्थिक मुद्दों को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा। बेलग्रेड में हुए पहले सम्मेलन (1961) में आर्थिक मुद्दे ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं थे। सन् 1970 के दशक के मध्य तक आर्थिक मुद्दे प्रमुख हो उठे। इसके परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्ष आंदोलन आर्थिक दबाव-समूह बन गया। सन् 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध तक नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था को चलाये रखने के प्रयास मंद पड़ गए। इसका मुख्य कारण था विकसित देशों द्वारा किया जा रहा तेज विरोध। विकसित देश एक सुर में विरोध कर रहे थे जबकि गुटनिरपेक्ष देशों को इस विरोध के बीच अपनी एकता बनाए रखने के लिए जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ रही थी ।

22. दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान) की स्थापना सन् 1967 में बैंकॉक घोषणा में की गयी। इस संगठन के प्रारम्भिक सदस्यों में इण्डोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर एवं थाईलैण्ड थे। बाद में ब्रुनेई दारुसलाम, वियतनाम, लाओस, म्यांमार एवं कम्बोडिया भी आसियान में सम्मिलित हो गये। वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 10 है। इसका मुख्यालय जकार्ता (इंडोनेशिया) में है।

आसियान की प्रमुख विशेषताएँ - आसियान की प्रमुख संस्थाओं में आसियान सुरक्षा समुदाय, आसियान आर्थिक समुदाय एवं आसियान सामाजिक - सांस्कृतिक समुदाय आदि हैं; जिनका विवरण निम्नलिखित है।

(i) आसियान सुरक्षा समुदाय - आसियान सुरक्षा समुदाय क्षेत्रीय विवादों को सैनिक टकराव तक ले जाने की सहमति पर आधारित है। सन् 2003 तक आसियान के सदस्य देशों ने कई समझौते किये; जिनके माध्यम से प्रत्येक देश ने शान्ति, सहयोग निष्पक्षता व अहस्तक्षेप को बढ़ावा देने, राष्ट्रों के आपसी अन्तर एवं सम्प्रभुता के

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

अधिकारों का सम्मान करने पर अपनी वचनबद्धता प्रकट की। सन् 1994 में आसियान देशों की सुरक्षा एवं विदेश नीतियों में तालमेल बनाने के लिए आसियान क्षेत्रीय मंच की स्थापना की गयी।

(ii) आसियान आर्थिक समुदाय - आसियान आर्थिक समुदाय का उद्देश्य आसियान देशों का साझा बाजार एवं उत्पादन आधार तैयार करना है तथा इस क्षेत्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में सहायता प्रदान करना है। यह संगठन इस क्षेत्र के देशों के आर्थिक विवादों को निपटाने के लिए निर्मित वर्तमान व्यवस्था में भी सुधार करना चाहता है। आसियान ने निवेश, श्रम एवं सेवाओं के सम्बन्ध में मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने पर भी ध्यान दिया है। इस प्रस्ताव पर आसियान के साथ बातचीत करने की शुरुआत संयुक्त राज्य अमेरिका व चीन ने कर दी है।

(iii) आसियान सामाजिक व सांस्कृतिक समुदाय - आसियान का यह समुदाय सम्बन्धित देशों में शैक्षिक विकास, समाज कल्याण, जनसंख्या नियन्त्रण, संचार एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में पारस्परिक सहयोग को बढ़ावा देने का कार्य कर रहा है।

आसियान का विज़न दस्तावेज 2020 - दक्षिण: पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान) के विज़न दस्तावेज 2020 आसियान की बहिर्मुखी पहचान पेश करता है। इस नीति के अंतर्गत आसियान देशों ने पूर्वी तिमोर समस्या का समाधान किया है।

अथवा

अमेरिका ने यूरोप की अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के लिए भरपूर सहायता प्रदान की थी। इसे मार्शल - योजना के नाम से जाना जाता है। अमेरिका ने 'नाटो' के अन्तर्गत एक सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को जन्म दिया। मार्शल योजना के अन्तर्गत ही सन् 1948 में यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना की गयी; जिसके माध्यम से पश्चिमी यूरोप के देशों को आर्थिक सहायता दी गयी। यह एक ऐसा मंच बन गया; जिसके माध्यम से पश्चिमी यूरोप के देशों ने व्यापार तथा आर्थिक मामलों में एक - दूसरे की सहायता प्रारम्भ की। एक लम्बी समयावधि में निर्मित यूरोपीय संघ आर्थिक सहयोग वाली व्यवस्था से परिवर्तित होकर अधिकाधिक राजनीतिक स्वरूप धारण करता चला गया। अब यूरोपीय संघ स्वयं काफी सीमा तक एक विशाल राष्ट्र राज्य की तरह ही कार्य करने लगा। हालांकि यूरोपीय संघ का एक अलग संविधान निर्मित किये जाने की असफल कोशिश की जा चुकी है परन्तु इसका अपना झण्डा, गान, स्थापना दिवस और अपनी मुद्रा है। अन्य देशों से सम्बन्धों के मामले में इसने काफी सीमा तक संयुक्त विदेश तथा सुरक्षा नीति भी बना ली है। नये सदस्यों को सम्मिलित करते हुए यूरोपीय संघ ने सहयोग के दायरे में रहते हुए विस्तार का प्रयास किया। यूरोपीय संघ की मुद्रा यूरो अमेरिकी डॉलर के लिये खतरा बनती जा रही है। विश्व व्यापार में इसकी हिस्सेदारी अमेरिका से तीन गुना ज्यादा है। फ्रांस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थाई सदस्य है जिसके पास लगभग 335 परमाणु हथियार है तथा अनेक सदस्य अस्थाई सदस्य के रूप में भी रहते हैं जिससे UNO में यह शक्तिशाली बन जाता है।

यूरोपीय संघ की सीमाएँ - एक अधिराष्ट्रीय संगठन के रूप में यूरोपीय संघ, आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप करने में सक्षम है, परन्तु अनेक मामलों में इसके सदस्य देशों की अपनी विदेश तथा रक्षा नीति हैं जो विभिन्न मुद्दों पर परस्पर एक-दूसरे के विरुद्ध भी होती हैं। उदाहरणार्थ; इराक पर अमेरिकी हमले में ब्रिटिश प्रधानमन्त्री तो उसके साथ थे, लेकिन जर्मनी तथा फ्रांस इस आक्रमण के विरुद्ध थे। इसी तरह यूरोप के कुछ भागों में यूरो को लागू किये जाने के कार्यक्रम को लेकर भी काफी मतभेद रहे थे। पूर्व ब्रिटिश प्रधानमन्त्री मार्गरेट थैचर ने ग्रेट ब्रिटेन को यूरोपीय बाजार से अलग रखा। डेनमार्क तथा स्वीडन ने मास्ट्रिस्ट सन्धि तथा संयुक्त यूरोपीय मुद्रा यूरो को मानने का प्रतिरोध किया। उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि विदेशी तथा रक्षा मामलों में कार्य करने की यूरोपीय संघ की क्षमता सीमित है।

23. स्वतंत्र भारत के पुनर्निर्माण के समक्ष अनेक चुनौतियाँ थी, इनमें से प्रमुख निम्नलिखित है -

(i) देश की क्षेत्रीय अखण्डता को कायम रखने की चुनौती - आजादी के तुरन्त बाद देश की क्षेत्रीय अखण्डता को कायम रखने की चुनौती सबसे प्रमुख थी। भारत अपने आकार व विविधता के कारण एक उपमहाद्वीप है। यहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों, वर्गों, भाषाओं, बोलियों, संस्कृति को मानने वाले लोग निवास करते हैं। अतः यही माना जा रहा था कि इतनी विभिन्नताओं से भरा कोई देश अधिक दिनों तक एकता कायम नहीं रख सकता।

(ii) लोकतांत्रिक व्यवस्था को कायम करना - दूसरी चुनौती लोकतांत्रिक व्यवस्था को सफलतापूर्वक लागू रखने की थी। स्वतंत्र भारत में 85 प्रतिशत मतदाता निरक्षर थे। अनेक आलोचकों का मानना था कि भारत में लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। भारत ने संसदीय शासन पर आधारित प्रतिनिधित्व मूलक लोकतंत्र को अपनाया। भारतीय संविधान भारत की आन्तरिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक शक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों की वैधानिक अभिव्यक्ति है। संविधान में मौलिक अधिकारों की व्यवस्था की गयी है तथा प्रत्येक नागरिक को मतदान का अधिकार भी दिया गया है।

इन विशेषताओं के आधार पर यह बात सुनिश्चित हो गई कि लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था के बीच राजनीतिक मुकाबले होंगे। लोकतंत्र को कायम करने के लिए लोकतांत्रिक संविधान आवश्यक होता है परन्तु यह भी काफी नहीं होता। देश के सामने यह चुनौती

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

भी थी कि संविधान पर आधारित लोकतांत्रिक व्यवहार व व्यवस्थाएँ भी चलन में आएँ ताकि लोकतंत्र कायम रह सके।

(iii) आर्थिक विकास हेतु नीति निर्धारित करना - स्वतंत्रता के तुरन्त बाद तीसरी प्रमुख चुनौती थी - आर्थिक विकास हेतु नीतियों का निर्धारण करना। इन नीतियों के आधार पर सम्पूर्ण समाज का विकास होना था, किन्हीं विशेष वर्गों का नहीं।

इस चुनौती का भी सफलतापूर्वक सामना हमारे नीति निर्माताओं ने किया। भारतीय संविधान के द्वारा भारत में एक लोक-कल्याणकारी राज्य की स्थापना किए जाने की व्यवस्था की गयी। इसी व्यवस्था के अन्तर्गत भारतीयों को अवसर की समानता तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की गयी। सरकार से यह भी अपेक्षा की गयी कि वह अपंगों, वृद्धों व बीमार व्यक्तियों की उचित सहायता करें। उपर्युक्त चुनौतियों का सामना भारत के नीति - निर्माताओं ने डटकर किया। भारत में लोकतंत्र की धारणा कारगर सिद्ध हुई राज्यों के भाषाई पुनर्गठन के बावजूद देश की एकता और अधिक मजबूत हुई क्योंकि हमारे स्वतंत्रता-संग्राम की गहरी प्रतिबद्धता लोकतंत्र में थी।

अथवा

सन् 1952 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने दिसम्बर 1952 में आंध्र प्रदेश नाम से अलग राज्य बनाने की घोषणा की। आन्ध्र प्रदेश के गठन के साथ ही देश के अन्य हिस्सों में भी भाषाई आधार पर राज्यों को गठित करने का संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इन संघर्षों के कारण तत्कालीन केन्द्र सरकार ने 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया। राज्य पुनर्गठन आयोग का प्रमुख कार्य राज्यों के सीमांकन के सम्बन्ध में गौर करना था। इसने अपनी रिपोर्ट में स्वीकार किया कि राज्यों की सीमाओं का निर्धारण वहाँ बोली जाने वाली भाषा के आधार पर होना चाहिए।

राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों का आलोचनात्मक विश्लेषण

राज्य पुनर्गठन आयोग की प्रमुख सिफारिशें निम्नलिखित थीं।

- भारत की एकता व सुरक्षा की व्यवस्था बनी रहनी चाहिए।
- राज्यों का गठन भाषाई आधार पर किया जाए।
- भाषाई और सांस्कृतिक सजातीयता का ध्यान रखा जाए।
- वित्तीय तथा प्रशासनिक विषयों की ओर उचित ध्यान दिया जाए।

इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम के आधार पर 14 राज्य और 6 केन्द्र - शासित प्रदेश बनाए गए। स्वतंत्रता के बाद के प्रारम्भिक वर्षों में एक बड़ी चिन्ता यह थी कि अलग राज्य बनाने की मांग से देश की एकता व अखण्डता खतरे में पड़ जाएगी। आशंका यह भी थी कि नए भाषाई राज्यों में अलगाववाद की भावना पनपेगी व नव-निर्मित भारतीय राष्ट्र पर दबाव बढ़ेगा। परन्तु जनता के दबाव में सरकार ने अंततः भाषा के आधार पर पुनर्गठन का मन बनाया। इसके अलावा क्षेत्रीय मांगों को मानना तथा भाषा के आधार पर नए राज्यों का गठन करना एक लोकतांत्रिक कदम के रूप में देखा गया। भाषाई राज्य तथा इन राज्यों के गठन के लिए चले आन्दोलनों ने लोकतांत्रिक राजनीति तथा नेतृत्व की प्रकृति को बुनियादी रूप से बदला है। आधार पुनर्गठन से राज्यों के सीमांकन के लिए एक समरूप आधार भी मिला। इससे देश की एकता और ज्यादा मजबूत हुई। भाषावार राज्यों के पुनर्गठन से विभिन्नता के सिद्धान्त को स्वीकृति मिली। लोकतंत्र को चुनने का अर्थ था विभिन्नताओं को पहचानना तथा उन्हें स्वीकार करना। अतः भाषाई आधार पर नए राज्यों का गठन करना एक लोकतांत्रिक कदम साबित हुआ।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan कर आज ही 'उत्कर्ष एप' डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject Live	₹600/- per subject Recorded

Class XI-XII
(Science, Commerce & Arts)

• LIVE & Recorded Classes • English & Hindi Medium

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर
Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M+ SUBSCRIBERS
2 M+ SUBSCRIBERS
10 M+ DOWNLOADS
1 M+ FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com